भाषा और कला हस्तक्षेप | निज़ामुद्दीन मॉडल

ज्योत्सना लाल और हैदर मेहदी रिज़वी

दिल्ली की हज़रत निज़ामुद्दीन बस्ती भारत की बहुलवादी परम्पराओं का केन्द्र है। यहीं पर 13 वीं शताब्दी के सूफ़ी सन्त हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह है जिसके दर्शन करने सभी धर्मों के तीर्थयात्री आते हैं। 700 साल पुरानी इस बस्ती में 10,000 से अधिक लोग रहते हैं और 70% से अधिक लोग असंगठित क्षेत्र में काम करते हैं। आगा खान ट्रस्ट फ़ॉर कल्चर और आगा खान फ़ाउण्डेशन की, द निज़ामुद्दीन अर्बन रिन्यूअल इनिशिएटिव, एक सार्वजनिक-निजी भागीदारी परियोजना है I 2007 से चल रही इस परियोजना का उद्देश्य निज़ामुद्दीन बस्ती में समुदाय के जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए धरोहर-संरक्षण का उपयोग करना है।

इस क्षेत्र में कार्यक्रम के हस्तक्षेप को जीवन की गुणवत्ता के सर्वेक्षण के आधार पर डिज़ाइन किया गया था, जिसमें बच्चों की शिक्षा की ख़राब गुणवत्ता एक प्रमुख मुद्दे के रूप में सामने आई। यह आश्चर्य की बात नहीं थी क्योंकि निज़ामुद्दीन बस्ती में 98% मुसलमान हैं। सच्चर समिति की रिपोर्ट (नवम्बर,2006) में मुसलमानों में शिक्षा को, विशेष रूप से महिलाओं और लड़कियों की शिक्षा को, एक प्रमुख मुद्दे के रूप में चिह्नित किया जा चुका है। निज़ामुद्दीन बस्ती में यह समस्या और भी गम्भीर थी क्योंकि नगर निगम के प्राथमिक विद्यालय में आने वाले अधिकतर बच्चे पहली पीढ़ी के स्कूल जाने वाले बच्चे थे।

निज़ामुद्दीन अर्बन रिन्यूअल इनिशिएटिव ने नगर निगम स्कूल के भौतिक बुनियादी ढाँचे, स्कूल प्रबन्धन, कक्षा प्रक्रियाओं और समुदाय के साथ जुड़ाव में सुधार करने का कार्य किया।

पृष्ठभूमि

एसडीएमसी (दक्षिण दिल्ली मुनिसिपल कारपोरेशन) स्कूल में नामांकित बच्चों के माता-पिता को यूँ तो साक्षर के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है, लेकिन यह एक व्यापक क्षेत्र है और उनके व्यवसाय और घर के माहौल को शायद ही सीखने के अनुकूल कहा जा सके। माता-पिता की सीमित साक्षरता, उनके काम करने की लम्बी अवधि, घर पर प्रिंट सामग्री का अभाव, छोटे भाई-बहनों की देखभाल करने की आवश्यकता, कम उम्र में ही घरेलू हिंसा और अपमानजनक भाषा का सामना करना – यह सब स्कूल में आने वाले बच्चों के जीवन के प्रमुख गुण-अवगुण हैं।

निज़ामुद्दीन बस्ती की प्रकृति ऐसी है कि यह पूरे भारत के लोगों को आकर्षित करती है, वैसे यहाँ बिहार, बंगाल और उत्तर प्रदेश के लोगों की प्रमुखता है। इसका मतलब यह भी हुआ कि स्कूल में नामांकित बच्चों में से कई बच्चे घर पर हिन्दी नहीं बोलते, जो एसडीएमसी स्कूल में शिक्षण की भाषा है। बोलचाल की अँग्रेज़ी से तो उनका सम्पर्क और भी कम है।

इसलिए अगर हम निज़ामुद्दीन के एसडीएमसी प्राथमिक विद्यालय में नामांकित बच्चों को परिभाषित करने वाले सामान्य कारकों की पहचान करने की कोशिश करें तो – वे ऐसे परिवार के होते हैं जहाँ संसाधनों की कमी होती है, लगभग निश्चित रूप से वे मुसलमान होते हैं, घर में बहुत कम शैक्षिक समर्थन मिलता है (कुछ लोग बस्ती के ही किसी युवा व्यक्ति को ट्यूटर के रूप में काम पर रख लेते हैं) और इस बात की काफ़ी सम्भावना होती है कि शिक्षण की भाषा उनकी मातृभाषा से अलग हो।

2007 में स्कूल की स्थिति

2007 में जब परियोजना शुरू हुई थी तब प्राथमिक स्कूल एक उजाड़-सी जगह थी, स्कूल में मुश्किल से 50-60 बच्चे आते थे जबकि नामांकन 100 से अधिक था। स्कूल उतने न्यूनतम घण्टों के लिए भी काम नहीं करता था जितना अपेक्षित था और पाठ्यक्रम का संचालन शिक्षकों की प्राथमिकता नहीं थी।

स्कूल की इमारत और उसका रख-रखाव सीखने के माहौल के अनुकूल नहीं था और एसडीएमसी के सुरक्षा मानकों पर भी पूरा नहीं उतरता था। कक्षाओं में रोशनी और हवा की अच्छी व्यवस्था नहीं थी, फ़र्नीचर असुविधाजनक था और कक्षा में कोई चार्ट वगैरह प्रदर्शित नहीं किए गए थे। शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया के नाम पर रटकर सीखने पर ज़ोर दिया जाता था और शारीरिक दण्ड देने का चलन था। बच्चों और शिक्षकों के सम्बन्ध भयपूर्ण तो नहीं लेकिन तनावपूर्ण थे और कक्षा-प्रक्रियाएँ अप्रेरक। बच्चों और शिक्षकों की उपस्थिति अनियमित थी। बच्चों का शैक्षिक स्तर न तो उम्र के उपयुक्त था और न ही कक्षा-उपयुक्त; सबसे ख़राब बात थी शिक्षकों का रवैया, जिन्हें लगता था कि बच्चे पढ़ाने के लायक नहीं हैं और माता-पिता का रवैया जिन्हें लगता था कि उनके बच्चे नहीं सीख सकते।

स्कूल परिवर्तन की प्रक्रिया

निज़ामुद्दीन बस्ती के समुदाय और वहाँ आने वाले लोग यह

मानते हैं कि दक्षिण दिल्ली नगर निगम (एसडीएमसी) स्कूल बिल्कुल बदल गया है। एसडीएमसी *प्रतिभा विद्यालय* का परिवर्तन एक जन-सार्वजनिक-निजी भागीदारी के तहत हुआ है जिसमें एसडीएमसी, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) और केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (सीपीडब्लूडी) सार्वजनिक साझेदार तथा आगा खान फाउण्डेशन और आगा खान ट्रस्ट फॉर कल्चर निजी भागीदार हैं [जिन्हें साथ में आगा खान डेवलेपमेंट नेटवर्क (एकेडीएन) के रूप में जाना जाता है]। इन बदलावों को लाने के पीछे हमारी प्रेरणा थी इस बात पर हमारा दृढ़ विश्वास कि अगर सीखने का सही अवसर और वातावरण दिया जाए तो हर बच्चा सीख सकता है।

सभी हितधारकों के साथ चर्चा के बाद स्कूल में काम शुरू हुआ। पहले हमने प्रस्तावित बदलावों पर राय पाने के लिए कई क्लस्टर-स्तरीय बैठकों के माध्यम से समुदाय के साथ चर्चा की। इसमें माता-पिता और बच्चों के साथ एक विज़निंग एक्सरसाइज़ की गयी जिसमें चर्चा की गई कि आदर्श स्कूल के बारे में उनके क्या विचार हैं। माता-पिता और बच्चों ने बताया कि वे अपने लिए कैसा स्कूल पसन्द करेंगे।

दूसरा, भौतिक अवसंरचना का आन्तरिक आकलन करते समय इस बात का ध्यान रखा गया कि विद्यालय के बुनियादी ढाँचे और प्रक्रियाओं में परिवर्तन करने से विद्यालय में विद्यार्थियों का नामांकन बढ़ेगा। इसमें एसडीएमसी मानदण्डों के बरक्स विद्यालय की इमारत की स्थिति का आकलन और कमियों की पहचान की गई। इसके अलावा भवन का डिज़ाइन बनाने के लिए एक विशेषज्ञ वास्तुकार की मदद ली गई ताकि विद्यालय के भवन का उपयोग अधिगम-सहायक सामग्री के रूप में किया जा सके। इसे बिल्डिंग एज़ अ लर्निंग एड (BaLA) दृष्टिकोण कहा जाता है।

तीसरा, दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के साथ मिलकर हिन्दी और गणित में बच्चों के शैक्षिक स्तर अर्थात साक्षरता और संख्या-ज्ञान का आकलन किया गया ताकि हस्तक्षेपों को डिज़ाइन करने में मदद हो सके।

बेसलाइन आकलन और स्थिति के विश्लेषण के आधार पर निज़ामुद्दीन अर्बन रिन्यूअल इनिशिएटिव द्वारा हस्तक्षेप के लिए निम्नलिखित क्षेत्रों की पहचान की गई। यह इस प्रकार थे :

- भवन का भौतिक सुधार और उसके बुनियादी ढाँचे में सुधार
- स्कूल प्रबन्धन
- कक्षा-प्रक्रियाएँ जिनमें पाठ्यक्रम संवर्धन और अन्य रणनीतियाँ शामिल हैं
- समुदाय के साथ जुड़ाव
- स्कूल के बाद के कार्यक्रम ताकि बच्चे अपनी शिक्षा जारी रखें

निज़ामुद्दीन मॉडल

निज़ामुद्दीन मॉडल अनिवार्य रूप से ऐसे निर्धारकों पर काम कर रहा है जो शिक्षा और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करते हैं। यही कारण है कि यह परियोजना प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका, स्वच्छता, ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन और संस्कृति के क्षेत्रों में काम करती है।

यह लेख कक्षा प्रक्रियाओं और पाठ्यक्रम संवर्धन के दो तत्वों पर ध्यान देता है यानी कि भाषा-शिक्षण और कला हस्तक्षेप जैसे बदलाव जो सीखने में बच्चों की मदद करें।

भाषा-शिक्षण

प्राथमिक स्तर पर हिन्दी पढ़ाने के लिए सामान्यतया जो रणनीति अपनाई जाती है उसमें पहले वर्णमाला सिखाई जाती है और फिर बारहखड़ी याद करवाई जाती है। इसके बाद बच्चों को बिना मात्रा वाले दो और तीन अक्षर के छोटे शब्द सिखाए जाते हैं और फिर इन शब्दों का प्रयोग करते हुए छोटे वाक्य। इसके बाद बच्चों को अपनी पाठ्यपुस्तकों के पाठ पढ़ने और लिखित कार्य करने के लिए दिए जाते हैं जिसमें वे मुख्य रूप से प्रश्नों के उत्तर देते हैं।

एसडीएमसी स्कूल में एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकों का उपयोग किया गया। इन पुस्तकों में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 के अनुसार भाषा-शिक्षण के दृष्टिकोण को पूर्ण रूप से बदल दिया गया था और *समग्र भाषा शिक्षण* विधि का उपयोग किया गया था। दुर्भाग्य से शिक्षकों ने किसी भी सेवाकालीन प्रशिक्षण में भाग नहीं लिया था और इसलिए वे नई पाठ्यपुस्तकों का उपयोग करने में सहज नहीं थे।

आगा खान फाउण्डेशन ने एसडीएमसी शिक्षकों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में इस मुद्दे को सम्बोधित किया और समुदाय से ही शिक्षकों को नियुक्त किया। शिक्षकों ने नए दृष्टिकोण के अनुसार पाठ-योजनाएँ बनाना सीखा और कहानी के नक्शे, चरित्र पिरामिड, चरित्र विश्लेषण, 6 डब्ल्यू फ्रेमवर्क - क्या, कब, कहाँ, किसने, क्यों और किसको- बनाए (6 Ws- what, when, where, who, why, whom) और उन्हें केन्द्रीय विचार तथा कहानी के अन्य विचारों के साथ इसका सम्बन्ध पहचानने के लिए प्रशिक्षित किया गया। उन्होंने यह भी सीखा कि नए प्रकार के इन अभ्यासों को कैसे 'बनाना' है। पूरी पाठ्यपुस्तक के लिए पाठ-योजना बनाई गई और इससे शिक्षकों को नए पाठ्यक्रम पर काम करने में मदद मिली। भाषा शिक्षण के परिवर्तित दृष्टिकोण के पीछे के दर्शन को समझने में भी शिक्षकों की मदद की गई।

शिक्षकों ने प्रशिक्षण के दौरान शिक्षण-अधिगम सामग्री तैयार की ताकि बच्चे सन्दर्भ के साथ पढ़ना सीख सकें – यह नए दृष्टिकोण का सबसे प्रमुख बदलाव था। साथ ही इसमें कई सारे खेल भी शामिल थे। भाषा सीखने की सुविधा के लिए एक





पुस्तकालय बनाया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रमों में इस बात पर भी ध्यान दिया गया कि कक्षा में की जा रही गतिविधि के आधार पर कक्षा को पुनर्व्यवस्थित किया जाए। स्कूल में परिवर्तन लाने के लिए वहाँ पर हल्के फ़र्नीचर लाए गए ताकि बच्चे हमेशा पंक्तियों में बैठने की बजाय ख़ुद ही फ़र्नीचरों की व्यवस्था बदलकर बैठ सकें। बच्चों को छोटे समूहों में काम करने की आदत नहीं थी, लेकिन उन्होंने धीरे-धीरे यह सीखा कि जब वे समूहों में काम करते हैं तो प्रत्येक बच्चे के लिए योगदान करना आवश्यक होता है। शिक्षक कहानी-पठन के सत्र के दौरान बच्चों को अपने पास बुलाते और इस तरह से कक्षा में हँसी-ख़ुशी का माहौल पैदा करते। एसडीएमसी ने वर्ष के अन्त में परीक्षाओं को जारी रखा और आगा खान फाउण्डेशन ने अधिगम के आकलन पर ध्यान केन्द्रित किया जिसमें बच्चे के पढ़ने, लिखने, बोध और बोलने का आकलन किया गया था। आकलन में ऐसे प्रश्न भी शामिल थे जिनके लिए बच्चे को पाठ से परे जाकर अपनी कल्पना का उपयोग करना होता था।

इन विविध रणनीतियों ने बच्चों को अपने भाषा-कौशल में सुधार करने में मदद की और बच्चों की भाषागत क्षमताओं में 20 प्रतिशत से 80 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई।

कला सम्बन्धी हस्तक्षेप

इस बात के मद्देनज़र कि इस परियोजना का नेतृत्व आगा खान ट्रस्ट फॉर कल्चर द्वारा किया गया है, कला सम्बन्धी हस्तक्षेप के द्वारा आगे बढ़ना एक तर्कसंगत तरीक़ा था। इसकी शुरुआत थिएटर और फ़ोटोग्राफी की कार्यशाला के साथ हुई थी जिसके लिए बच्चों ने अपने हाथ से बनाए हुए निमंत्रण कार्ड देकर अपने माता-पिता को आमंत्रित किया। ऐसा पहली बार हुआ था कि जब समुदाय को नाटक देखने के लिए स्कूल में आमंत्रित किया गया। इस हस्तक्षेप के लिए स्कूल में जगह बनाने की ज़रूरत थी। स्कूल की समय-सारिणी में इसके लिए समय का प्रावधान करना था, स्रोत शिक्षकों की पहचान की जानी थी और बच्चों के लिए अवसरों का निर्माण करने की आवश्यकता थी।

कला के लिए दो शिक्षक नियुक्त किए गए थे और समय-सारिणी में इस तरह से परिवर्तन किए गए कि प्रत्येक बच्चे को कम-से-कम एक घण्टे के लिए कला सम्बन्धी गतिविधियाँ करने का मौका मिले। भाषा-शिक्षण में थियेटर रोल-प्ले; मासिक बाल सभाएँ और विशेष, साप्ताहिक प्रातःकालीन सभाएँ जिनमें विशेष दिन मनाए जाने लगे ताकि बच्चों को अभिव्यक्ति के लिए एक औपचारिक मंच मिल सके। बच्चों के लेखन और चित्रों को स्थान देने लिए *रंग-तरंग* नामक एक पत्रिका शुरू की गई। धरोहर के पाठ्यक्रम के साथ सांस्कृतिक सराहना और इको-क्लब के माध्यम से पर्यावरणीय चेतना जैसे विषयों को भी जोड़ा गया। निर्दिष्ट 'बैगलेस दिनों' में विशेष गतिविधियों का आयोजन किया जाता था।

इन सभी हस्तक्षेपों से बच्चों को अपनी विश्व-दृष्टि का विस्तार करने, अभिव्यक्ति के लिए मंच पाने, आत्मविश्वास हासिल करने और स्कूल में उपस्थिति पर सकारात्मक प्रभाव डालने में

मदद मिली और वे स्कूल में नियमित रूप से आने लगे।

निज़ामुद्दीन बस्ती में, जहाँ अधिकतर अभिभावक ज़्यादा पढ़े-लिखे नहीं हैं लेकिन अपने बच्चों को शिक्षित करना चाहते हैं, समुदाय के साथ जुड़ना बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाता है। अक्सर माता-पिता शिक्षक समुदाय के सदस्यों से मिलने में झिझकते हैं।

विचारणीय बिन्दु

स्कूल में बदलाव आया है, लेकिन आगा खान विकास नेटवर्क एजेंसियों द्वारा प्रदान/सृजित किए गए अतिरिक्त संसाधनों के बिना भी काम की निरन्तरता बनी रहेगी या नहीं, यह बहुत बड़ा प्रश्न है। सरकार द्वारा ख़र्च की जाने वाली मौजूदा राशि को देखते हुए ऐसा नहीं लगता है कि अतिरिक्त संसाधन मिल पाएँगे। दिल्ली की एनसीटी सरकार ने शिक्षा के लिए 26% की मंज़ूरी दी है जो शायद सबसे बड़ा आवंटन है किन्तु प्राथमिक शिक्षा, स्थानीय सरकार के अधिकार क्षेत्र में आती है, (इस मामले में नगर निगम) और उस आवंटन से इस स्कूल को लाभ नहीं मिलता।

यहाँ कुछ मुद्दे दिए गए हैं जो आगे बढ़ने के दौरान हमारे समक्ष आते हैं :

- अधिगम को आगे बढ़ाने वाले कारकों के बारे में अब सभी को बहुत अच्छी तरह से पता है, फिर भी सरकारी स्कूलों में स्टाफ़ की कमी है, वे गन्दे हैं, नीरस हैं और बच्चों को सीखने के लिए बिल्कुल प्रेरित नहीं करते। अग्रलिखित विषयों पर कई शोध अध्ययन उपलब्ध हैं जैसे - शिक्षण के आदर्श घण्टे, क्या मध्याह्न भोजन योजना उपस्थिति को प्रोत्साहित करती है, क्या शौचालयों का होना लड़कियों के नामांकन को बढ़ाता है - और हम निश्चित रूप से इनके महत्त्व को जानते हैं। पर लगता है कि हमारे भीतर ऐसे स्कूल बनाने के इरादों की कमी है जो बच्चों को सीखने के लिए अपनी ओर खींचें। अच्छा होगा अगर बहस इन बातों पर हो कि पाठ्यक्रम का संचालन कैसे किया जाए, भाषा-शिक्षण की विधि क्या होनी चाहिए बजाय इसके कि हम स्कूल की बुनियादी आवश्यकताओं के बारे में जो पहले से जानते हैं उन पर बहस करें।
- ऐसा क्या किया जाए कि शिक्षा प्रशासन हमारे शिक्षकों को एक ऐसा स्वायत्त व्यक्ति माने जो यह जानते हैं कि उनके बच्चों को क्या चाहिए और फिर उनका समर्थन करे?
- दिल्ली में बच्चे किसी न कारण से नवम्बर के बाद से नियमित रूप से स्कूल नहीं जा रहे हैं - शीतकालीन स्मॉग, कड़ाके की सर्दी, विरोध, दंगे और अब कोविड-19। धनी परिवारों के बच्चों की डिजिटल कक्षाओं तक पहुँच है लेकिन कम संसाधन वाले क्षेत्रों के बच्चों के पास यह सुविधा नहीं है। ऐसे परिवारों के बच्चों को फोन पर जो समय मिलता है वह अधिकतम 25-30 मिनट का होता है और उनके पास घर पर कंप्यूटर नहीं होता है। एसडीएमसी ने एक प्रकार का डिजिटल समर्थन शुरू कर दिया है - लेकिन इसका असर देखना बाक़ी है। ईडब्ल्यूएस कोटे के तहत 'पब्लिक स्कूलों' में दाख़िला लेने वाले बच्चों को अधिगम में एक अन्तराल का सामना करना पड़ेगा क्योंकि उनके अधिक सम्पन्न परिवारों के सहपाठियों की पहुँच डिजिटल कक्षाओं तक होगी।

यह देखना अभी बाक़ी है कि इन सबका क्या असर होगा, न सिर्फ़ उनके स्कूल जाने पर, बल्कि सीखने के सभी पहलुओं पर।



ज्योत्सना लाल आगा खान ट्रस्ट फॉर कल्चर के निज़ामुद्दीन अर्बन रिन्यूअल इनिशिएटिव की कार्यक्रम निदेशक हैं। वे निज़ामुद्दीन बस्ती में सामाजिक विकास की पहल को सम्भालती हैं। उनसे jyotsna.lall@akdn.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।



हैदर मेहदी रिज़वी आगा खान डेवलेपमेंट नेटवर्क के निज़ामुद्दीन अर्बन रिन्यूअल इनिशिएटिव के कार्यक्रम अधिकारी (शिक्षा) हैं। उनसे hydermehdi.rizvi@akdn.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : नलिनी रावल